हमारी स्वाभाविक नेचर है खुशी

मुम्बई की झोपड़पट्टी में रहने वाले बच्चे खेल रहे थे। शरीर पर पूर्ण वस्त्र भी नहीं थे। लेकिन खेलते हुए सभी बच्चों के चेहरे पर बहुत ही आकर्षक मुस्कान दिखाई दे रही थी। इसे देख वहाँ से जा रहे एक विदेशी फोटोग्राफर का मन उस दृश्य को अपने कैमरे में कैद करने का चाहा। जब वो तस्वीर खींचने लगा तो पास में खड़े बुजुर्ग ने उसको रोकने की कोशिश की, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि ऐसी गरीबी की तस्वीर लेकर वो भारत को नीचा दिखाये। विदेशी ने तस्वीर खींचने के लिए रोकने पर कहा कि मैं आपके भारत की गरीबी को दिखाने के लिए तस्वीर नहीं खींच रहा हूँ, बल्कि मैं तो उनके चेहरे की खुशी और भोलेपन की तस्वीर लेना चाहता हूँ कि इतने गरीब होने के बावजूद भी उनके चेहरे का मधुर स्मित बहुत ही अलौकिक, आकर्षक व लुभावना है। हमारे यहाँ ऐसा स्मित सब सुख-सुविधा होने के बावजूद भी नहीं देखने को मिलता। ये दृश्य हमें स्मृति दिलाता है कि भारत के हर मनुष्य के चेहरे का एक दैवी आकर्षण सबको लुभाता है। खुशमिजाज, खुश रहना भारतीयों की फितरत है, नेचर है। उनके रूहानी स्मित को सुख-साधन की कमी भी रोक नहीं पाती। इससे क्या प्रमाणित होता है कि हमारे भारत वासियों के जैसी दैवी आकर्षण दुनिया के अन्य किसी कोने में नहीं। खुशी हमारी नेचर है। अब बात आती है कि ऐसी नेचर पुनः हमारे चेहरे पर सदा रहे उसके लिए हमें क्या-क्या बातें ध्यान में रखनी हैं, इस पर हम थोड़ा विचार करते हैं।

ब्र.कु. गंगाधर

हाल ही में बाबा(परमात्मा) से मंगल मिलन मनाते हुए उनके द्वारा ये शब्द कानों में जैसे ही आया कि - खुशी आपकी नेचर है, खुश रहना है और खुशियां बांटनी हैं। ऐसा खुशनुमा चेहरा ही परमात्मा को प्रत्यक्ष करेगा। बाबा ने कहा कि हर हाल में, हर परिस्थिति में, उतराव-चढ़ाव में अपने चेहरे के स्मित को बनाये रखना है। इस ज़िम्मेवारी को हरेक को स्वयं ही उठाना है क्योंकि आज चारों ओर भय, दुःख, अशांति का माहौल है। करीब दो साल कोरोना काल में हम सबने गहन तपस्या की। अब पुनः विश्व सेवा के द्वार खुले हैं। ऐसे में हमारा खुशमिजाज चेहरा ही विश्व सेवा और विश्व परिवर्तन का आधार बनेगा। चाहे हम जहाँ भी जाते हैं, जिससे भी मिलते हैं, जिसके भी सम्पर्क में आते हैं तो हमारे चेहरे और चलन से उन्हें ईश्वरीय अलौकिक खुशबू अनुभव होनी चाहिए। यही हमसे परमात्मा की शुभ आश है। इसके लिए बाबा ने हमें बहुत ही सहज युक्तियां बताईं कि आप योग लगाने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी हो। कर्म करते योग में रहना अर्थात् परमात्मा पिता के साथ कर्म करना। सर्वशक्तिवान साथ है, यानी कि परमात्मा की सर्व शक्तियां आपके साथ हैं, ये स्मृति आपको सदा ही ऊर्जावान बनाए रखेगी। क्योंकि अकेले होंगे तो अकेले कार्य करने में कभी भी बाह्य परिस्थितियां, वातावरण का प्रभाव आपके ऊपर पड़ सकता है, जिससे आप खुशमिजाज नेचर से नीचे आ जायेंगे।

अपने रोल को पहचानें। जब हम अपने रोल को इस धरा पर अच्छी तरह से समझ जाते हैं कि मैं कौन हूँ, मैं किसकी हूँ और मेरे साथ कौन है, मेरा कौन साथ दे रहा है, इस फीलिंग में रहने से आपके चेहरे से हमेशा ही खुशी की रश्मियां बिखरती दिखाई देंगी। परमात्मा यही तो हमें बता रहे हैं कि आप अपने आप को, अपने कर्त्तव्य को पहचानो और सर्वशक्तिवान के साथ साथी बन साथ जिओ।

विजय आपकी निश्चित है। जैसे हमने गीता में पढ़ा है कि परमात्मा हमेशा पांडवों के साथ थे। विशेष रूप से अर्जुन जब भी दुविधा या असमंजस की स्थिति में आ जाता, तब उसकी ये स्मृति उसे हिम्मतवान बनाये रखती कि परमात्मा मेरे साथ है, चाहे कुछ भी हो जाये विजय तो हमारी ही होगी। इस स्मृति को हम सही-सही रूप में समझें और उसे स्वीकार करें तो हमारे मुख का स्मित कइयों के दुःख हर लेगा।

परमात्मा द्वारा प्राप्त खज़ानों को स्मृति में लायें। परमात्मा द्वारा मिले हुए ईश्वरीय खज़ानों को खा जायें और उसमें खो जायें। जैसे छत्तीस प्रकार के भोजन हमारे सामने हैं, हम उसको स्वीकार करते हैं, फिर उसे हज़म करते हैं, तब शक्तिशाली बनते हैं ना! इसी तरह परमात्मा के द्वारा मिले ज्ञान रूपी खज़ानों को मनन-चिंतन रूपी क्रिया से हमें अपना बनाना है। न सिर्फ अपना बनाना है किंतु उसे बारंबार मन, चित्त पर लाकर उसका अनुभव भी करना है। ये अलौकिक अनुभव आपके चेहरे की मुस्कान को सदा प्रज्वलित रखने में घृत का काम करेगा।

अलौकिक रूहानी आकर्षण मेरी नेचर है। खुश रहना मेरा कर्त्तव्य है, विजय निश्चित है और दुःख से बचने के लिए ईश्वरीय ज्ञान के खज़ाने मेरे पास हैं, और परमात्मा का साथ व स्नेह की छत्रछाया मुझपर सदा ही एक औरा, सुरक्षा कवच के रूप में सदा मेरे साथ-साथ है। इन स्मृतियों को बार-बार अपने मन, चित्त पर लाकर गुड फीलिंग के साथ सेवा के क्षेत्र में जायें। तब ही हम परमात्मा के परिवर्तन के कार्य को बखूबी निभा पायेंगे और परमात्म-प्रत्यक्षता भी कर सकेंगे। ठीक है ना!

किससे भी बात करें, किसे भी देखें तो स्वरूप की स्मृति भूले नहीं

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

संगमयुग का जो अन्तिम काल है, उस समय की हमको क्या तैयारी करनी है? उसकी तैयारी कर ली है या करनी है? अन्तिम समय के हिसाब से बाबा ने दो शब्द कहे हैं - एक तो अचानक होना है और एवररेडी रहना है। तो सबको ये दो शब्द याद रहते हैं ना? कभी भी बुलावा हो सकता है नेक्स्ट जन्म के लिए। इसीलिए बाबा ने अचानक के लिए कई बातें सुनाई हैं। जैसे आप अपनी हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझो क्योंकि सेकण्ड में क्या से क्या भी हो सकता है। इसलिए ऐसे समय पर नष्टोमोहा भी रहो और स्मृति स्वरूप भी रहो।

तो अन्तिम पेपर में पास होने के लिए, अभी से ही हमको क्या लक्ष्य रखना चाहिए, उसकी योजना अभी से बना लेनी चाहिए क्योंकि सेकण्ड का पेपर होना है। सेकण्ड में क्या से क्या भी हो सकता है इसीलिए बाबा कहते अभी से अशरीरी भव का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। यह मन चारों ओर के दृश्य देख करके विचलित होगा लेकिन इस मन को कन्ट्रोल करना, यह अभ्यास हो तब एक सेकण्ड में अशरीरी हो सकेंगे। कोई भी आकर्षण हमें खींचे नहीं तभी हम पास विद ऑनर होंगे। तो सेकण्ड में अशरीरी बनने का अभ्यास हमको अभी से करना पड़ेगा।

हम जिस बात को नहीं चाहते हैं वो होता तो है, यह सबके जीवन का अनुभव है। हम समझते हैं यह नहीं हो, कम से कम वेस्ट थॉट जो चलते हैं, उसके लिए भी सभी अभ्यास करते हैं कि व्यर्थ विचार नहीं आने चाहिए। लेकिन फिर भी आ ही जाते हैं, भिन्न-भिन्न रूप से माया आ जाती है, जो चाहते नहीं लेकिन आ जाती है, तो न चाहते भी क्यों आती है? कारण है बहुतकाल से बॉडी कॉन्शियस रहने का अभ्यास हो तो नैचुरल है वो विघ्न डालता है। तो यह अशरीरी बनने का अभ्यास अगर हम बहुतकाल से नहीं करेंगे तो बहुतकाल की मदद हमको नहीं मिलेगी। तो बाबा कहते हैं मन के मालिक बनके बार-बार शरीर के भान से परे अशरीरी रहने का अभ्यास बहुतकाल का आवश्यक है।

मैं आत्मा हूँ इस अनुभूति में रहें। आत्मा का पाठ बहुत पक्का होना चाहिए। तो हमारी यह प्रैक्टिस चाहिए - किससे भी बात करें, किसे भी देखें तो स्वरूप की स्मृति अपनी भूले नहीं। अपने असली स्वरूप की नॉलेज है लेकिन उसकी अनुभूति में कम रहते हैं, बॉडी कॉन्शियस की पुरानी स्मृति इमर्ज होती रहती है। तो अभी जो भी कहते हैं "मैं आत्मा अशरीरी हूँ" तो यह करने से ही अशरीरीपन का अनुभव होना चाहिए। "मैं आत्मा हूँ" तो इस स्वरूप का अनुभव होना चाहिए।

आत्मा समझने से परमात्मा की याद तो स्वतः ही आयेगी, क्योंकि आत्मा का कोई से कनेक्शन नहीं है सिवाए परमात्मा के।

स्व पर ध्यान देने वाली आत्मा न कभी डरती और न ही कभी कन्फ्यूज़ होती

राजयोगिनी दादी जानकी जी

हम सबका जन्म बाबा की दृष्टि से हुआ है, पालना भी दृष्टि से हुई है, बड़े भी बाबा की दृष्टि से हुए हैं। अभी दृष्टि के आधार से हम वाणी से परे जा रहे हैं। दृष्टि और बाबा के बोल जैसे कि ब्राह्मणों का भोजन है। सवेरे-सवेरे बाबा अच्छा ताज़ा, तरावटी और वैराइटी भोजन खिलाता है, जो रूहानियत में रहेंगे वही यह भोजन खा सकेंगे। कौन सुना रहा है? उसको देख करके खायेंगे तो अच्छी तरह से जल्दी हज़म भी हो जायेगा। यह भोजन खाते हल्के हो जायेंगे। तो कितने भाग्यवान हैं।

तो हमारे चिंतन में बाबा है, चिंता में कोई है ही नहीं। जिसके पास थोड़ी चिंता है, तो दुःख और भय भी ज़रूर होगा। जिसके चिंतन में बाबा है, मन बुद्धि में बाबा ही बाबा है, उसको कोई दुःख नहीं हो सकता। भय भी नहीं होगा कि पता नहीं क्या होगा! जिसके चिंतन में भगवान बैठा है उसका चिंतन बड़ा शुद्ध और श्रेष्ठ होगा, शुभ भावना वाला होगा। कोई कामना नहीं, कुछ नहीं चाहिए। बाबा को चिंतन में रखने से दुःख, चिंता मिट जाती है। सुख-शांति-शीतलता स्वरूप में आ जाती है। तो प्रोटेक्शन किससे हुई? ईश्वर के चिंतन से। हम सबके लिए शुभचिंतक हैं तो इंडिपेंडेंट हैं, निराधार हैं, बाबा की मदद है। निश्चय का बल है तो विजय समाई पड़ी है।

स्व की स्थिति पर ध्यान रखने वाली आत्मा पर बाबा का बहुत ध्यान है, जिसका स्व पर ध्यान कम है और बातों में ध्यान बहुत है, और सब बातों में बहुत होशियार हैं लेकिन स्व पर ध्यान कितने परसेन्ट है? स्वयं की कमज़ोरी स्वयं में अभी तक है, तो समझो कि परमात्म शक्ति काम नहीं कर रही है। औरों की जो निगेटिविटी है वो हमारे ऊपर छाया की तरह, वायब्रेशन के रूप में अपना प्रभाव डाल रही है, जिस कारण जल्दी घबरा जाते हैं, डरते या कभी कन्फ्यूज़ होते रहते हैं। अगर निश्चय का बल है, तो उससे कितने फायदे हैं, वह लिस्ट सामने रखो। जो निश्चयबुद्धि होगा वह तो कहेगा अरे! यह तो कुछ नहीं है! जितनी प्रालब्ध ऊंची है, परीक्षायें भी तो इतनी आयेंगी। नहीं तो पता कैसे चलेगा!

बाबा के बच्चे पक्के, सच्चे तब बनते हैं जब अपनी स्थिति पर ध्यान देते हैं। कभी हलचल में न आयें। अन्दर से अचल-अडोल-एकरस स्थिति बनाने की तीव्र इच्छा हो। तो वह स्थिति स्व, सेवा और सम्बन्ध में काम करेगी। सेवा में हलचल होगी, मान-अपमान होगा। हम चाहें कुछ और, होवे कुछ और। सम्बन्ध में तू-मैं आयेगा। सेवा तो मेरा भाग्य है, सम्बन्ध में अन्दर से सब मेरे बहन-भाई हैं, हम एक बाबा के बच्चे हैं। ऐसा शुद्ध पॉवरफुल वायुमण्डल बनाने की दृष्टि-वृत्ति अगर मेरी है तो जैसे बाबा से मैंने सबकुछ पा लिया है। सतयुग में न यह नॉलेज होगी, न कोई वर्णन करेंगे। परन्तु वह सतयुगी दुनिया लाने के लिए बाबा अभी रिहर्सल करा रहा है। अभी तो सबको अच्छी सैलवेशन मिल रही है, सबके पास अपना अच्छा घर है, कुटिया है, शुरु में तो हम सब दादियां इकट्ठे एक ही कमरे में रहती थीं। बाबा ने सब रिहर्सल करा दी है। तो बाबा देखता है मेरे बच्चों के दिल में क्या है? क्या सम्बन्धों में नम्रता है? अगर नम्रचित है तो बड़ा सुखी है। पुरुषार्थ में हिम्मत है तो मदद मिलती है, सेवा में शुभ श्रेष्ठ भावना है तो सफलता हुई पड़ी है।

रोज़ सवेरे एक ही धुन लगाओ 'मुझे मेरा बाबा मिल गया'

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जब मैं किसी के मुख से सुनती हूँ कहते हैं बाबा आप शक्ति देना... मैं कहती शक्ति भी क्यों मांगते! हम मांगने वाले भक्त नहीं हम तो अधिकारी बच्चे हैं। अधिकारी बच्चों के मुख से जब ऐसे बोल निकलते तो मैं यह बोल कानों से सुनना नहीं चाहती। अरे लुटाने वाला कहता तू लूट... जितना चाहे उतना लूट। जितना लूटेंगे लुटायेंगे उतना भरतू होते जायेंगे। वह सागर है, कोई तालाब नहीं जो सूख जायेगा। ऐसा निरन्तर खुद को स्वमान में रखो, नशे में रहो तो स्थिति कभी डगमग नहीं होगी।

बाबा ने हम बच्चों पर चोटी से पांव तक ऐसा वरदान का हाथ फेर दिया जो हमें कोई हिला नहीं सकता। सिर्फ दिल से गीत गाओ - मुझे तो मिल गया- कौन? प्यारा बाबा। जितने दिल से, जिगर से रुहरिहान कर सकते, खुशी में झूल सकते उतना झूलो, यही हमारे जीवन की लॉटरी है। खुद से पूछो हमें फूल बनाने वाला बाप, उस पर मैं भौंरे की तरह फिदा हूँ। दीवानी हूँ, मर गई हूँ, मिट गई हूँ या फिदा हूँ? हमारा बाबा है जादूगर... हमें उस जादूगर की जादूगरी पर फिदा हो जाना है। सचमुच उसने हमें अपना जादू लगा दिया... मैं कहती ऐसा जादू तो सबको लगे इससे कोई जुदा न रह जाए। यह जादू एक-एक पर लगे तो अहो भाग्य। भगवान का जादू लगे इनसे बड़ी दुनिया में कोई चीज़ नहीं।

आप सब अपने पास एक तराज़ू रखो- उस तराज़ू में एक तरफ रखो बाबा, दूसरे तरफ अपने जन्मों का, कर्मों का बन्धन... हरेक के अनेक जन्मों के अनेक हिसाब-किताब हैं, अपने कर्मों को नहीं कूटो लेकिन एक तरफ रखो कर्म, एक तरफ बाबा फिर वर्णन करो भारी कौन? कर्म! कर्म बड़े या कर्म के खाते को भस्म करने वाला बड़ा! कर्मों से बचाने वाले ने हमारी जवाबदारी स्वयं के हाथ में ले ली। उसने कहा तुम मेरी अंगुली पकड़ों, मैं तुम्हारे सब पाप दग्ध कर दूँगा, यह जिम्मेवारी उसने ली। जब जिम्मेवार ने हमारी जिम्मेवारी ली तो हमारा दिल-दिमाग, यह अंग सब शीतल हो गये। भगवान हम बच्चों से वायदा करता- वह अपना वायदा निभा रहा है फिर हम अपनी फुल जवाबदारी उसके हाथ में देकर हल्के क्यों नहीं होते! हल्के बनो तो फरिश्ते बनो।

रोज़ सवेरे एक ही धुन लगाओ- मुझे मेरा बाबा मिल गया। यह शिवबाबा की भांग पी लो, घोट-घोट कर नशा चढ़ा दो, बस इसी मस्ती में रहो तो बाकी दुनिया की सब मस्तियाँ खत्म हो जाएं। मुझे तो कई बार हंसी भी आती तो तरस भी पड़ता- कहते हैं मैं सच कहती हूँ मुझे इतना निश्चय नहीं बैठता। मुझे वह भगवान, वह ईश्वर मिल गया है, यह अन्दर से नहीं आता, मुझे तरस पड़ता, कहती हूँ बाबा आप कितने न प्यारे हो, लेकिन कितने गुप्त हो। बाबा इनके सामने तू बादल रख क्यों बैठे हो, जो बादलों के बीच आप सूर्य को यह नहीं जान सकते। बाबा को कहती- बाबा इनके सामने से यह बादल हटा दो तो यह देख लें, तू है कौन। तेरी इतनी शक्तियों की किरणें क्यों नहीं यह देखते! क्या इन्हें यह दिव्य बुद्धि नहीं मिली है! वास्तव में यह है सूक्ष्म में अपने देह अभिमान का नशा, इसलिए सूर्य की शक्ति को पहचान नहीं सकते। कई बार मन में जो यह संकल्प चलता कि जीवन का सौदा है, मालूम नहीं जीवन चल पायेगी या नहीं, मालूम नहीं मेरा भविष्य उज्जवल रहेगा। सोच समझकर कदम लेना चाहिए। पता नहीं जीवन का कैसा मोड़ आये... वह शादी तो क्या करनी, शादी तो बर्बादी है, बाबा का बनकर रहें तो ठीक है। परन्तु पता नहीं मेरे संस्कार किस तरह के हों, दूसरे के किस तरह के हों, सर्विस में कदम रखें सफलता न मिले तो... तो कहेंगी तुम्हें ब्रह्माकुमारी बनना है। वह तो ठीक है। ब्रह्माकुमारी तो ठीक है। लेकिन पता नहीं सेन्टर पर रहूँ, फिर आपस में न बनें, बैठकर मन खराब करूँ, इससे तो दूरबाज, खुशबाज रहना ही ठीक है, कम से कम परतंत्र तो नहीं रहूँगी, स्वतन्त्र रहना ठीक है। बाबा को ही तो याद करना है। बाबा की मुरली ही तो सुननी है, बाकी यह सर्विस में रहना, झंझटों में आना, इससे तो अपने को न्यारा रखना ही ठीक है। बाबा कहते न्यारे रहेंगे तो प्यारे बनेंगे, इससे ही आपे ही प्यारी बन जाऊंगी। अपनी शान में रहना चाहिए। आज की दुनिया में तो पैसे के सिवाए कुछ भी नहीं है, लोग भी पैसे की इज्जत करते, मैं ब्रह्माकुमारी तो बनी लेकिन पैसा होगा तो इज्जत तो मिलेगी। इसलिए कमाना ठीक है। बहुत हैं जो ऐसी भाषा बोलती हैं। मैं भी कहती हूँ - बिल्कुल ठीक है, सही बात है... लेकिन प्रवृत्ति वालों के लिए तो बाबा ने कहा है तुम दोनों की निभाओ। कुमारियों को किस मुरली में कहा, वह मुरली तो मैंने कभी सुनी नहीं है।